दीनानाथ पाठक 'बन्धु'

दीनानाथ पाठक 'बन्धु' मैथिलीक प्रसिद्ध कवि छथि। बेगूसराय जिलाक टुनही गाममे 1928 ई. मे हिनक जन्म भेलनि। माध्यमिक विद्यालयक शिक्षकक रूपमे ई अपन इलाकामे अत्यन्त लोकप्रिय छलाह। 'चाणक्य' नामक महाकाव्यक रचना सेहो कयलनि। हिनक निधन 1962 मे भेलनि।

काव्य सन्दर्भ -प्रस्तुत काव्य-अंश 'चाणक्य' महाकाव्यक पहिल सर्गसँ लेल गेल अछि। पुस्तकमे कर्मवीर चाणक्यकेँ कहल गेल अछि। एहि शब्दसँ हुनकहि विशेषता झलकैत अछि। मुदा, प्रस्तुत अंशमे कोनो एहन व्यक्ति जे काज करबामे विश्वास रखैत अछि, सक्रिय आ संघर्षशील अछि तकर लक्षण आ महत्वक वर्णन कवि कयलनि अछि। एहि प्रसंग राष्ट्रभक्ति पर सेहो जोर अछि। कविताक विचारे नहि, भाषा-भंगिमा पर्यन्त प्रेरणादायक अछि। ई उद्‌बोधन-काव्यक विलक्षण उदाहरण अछि।

कर्मवीर

कर्मवीर रवि-ज्योति पुञ्जकेँ सहय न विघ्न उलूक
अखिल विश्व पथ दैछ समुज्ज्वल रहने लक्ष्य अचूक
कर्मवीरकेँ निश्चित पथपर विघ्न रहय नहि ठाढ़
ताल ठोकि कय भिड़य जखन पर्वत पर लाबय गाढ़
कर्मवीरसँ कोटि कोटि संकट भयभीत पड़ाय
रहय दु:ख-पर्वत सभ सम्मुख देखितहिँ शीघ्र नशाय
महाविपत्ति न धैर्यधनीकेँ कायरकेँ भय दैछ
शूल फूल सभ आगू आगू हँसइत पथ देखबैछ
घनक चोट सहि लौह धातुसँ होइछ जखन तरूआरि
रहितहुँ छोट अनेक युद्धमे दैछ शत्रु संहारि
अग्नितापसँ स्वर्ण अपन् द्युति द्विगुणित ग्रहण करैछ
कर्मवीर बाधाक आगिसँ तहिना दीप्ति पबैछ
जखन समाज स्वराष्ट्र स्वदेशक होइछ शिथिल सभ अंग
विविध कलुष पातक अनीतिसँ मानवता विकलांग
होइछ प्रखर आह्वान क्रान्ति केर प्रबल प्रेरणा प्राप्त
जनसमाजसँ उद्‌बोधित क्यो उठइछ नेता आप्त
नेता सैह समाजक दुखमय शोषण-पीड़न जाल
उठा लैछ गोबर्द्धन गिरि सभ आङ्गुरपर तत्काल
कालकूट घट पीबि, सुधा-रस जगमे बाँटि सकैछ
मर्त्य-लोकसँ देव-लोक धरि नेता ओ कहबैछ

Fan

विष-ज्वाला-परिपूर्ण नागफन चढ़ि जे नाचि सकैछ
सैह समाजक, धर्मक, राष्ट्रक जन - नेता कहवैछ
टारि घोर संकट स्वराष्ट्र हित कऽ स्वकीय बलिदान
नेता पूर्वप्राप्त गौरव केर बढ़ा दैछ सम्मान

शब्दार्थ

कर्मवीर - काज करबामे बहादुर, काज करबामे विश्वास राखयवला
गाढ़ - रंग, भावनात्कम गंभीर रंग
नशाय - नाश हो
द्युति - चमक
दीप्ति - प्रकाश , चमक
कलुष - पाप

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

(i) 'कर्मवीर' केर रचयिता छथि।

(क) बुद्धिनाथ मिश्र (ख) उदयचन्द्र झा 'विनोद'
(ग) दीनानाथ पाठक 'बन्धु' (घ) सुकान्त सोम

(ii) 'दीनानाथ पाठक' बन्धुक रचना छनि -

(क) वन्दना (ख) हाथ
(ग) कर्मवीर (घ) रौदी अछि

2. रिक्त स्थानक पूर्ति करू -

(i) कर्मवीर निश्चित .... विघ्न रहय नहि ठाढ़
(ii) घनक चोट सहि .... धातुसँ होइड जखन तरूआरि
(iii) मर्त्य-लोकसँ देव-लोक धरि .... ओ कहबैछ।

3. लघूत्तरीय प्रश्न -

(i) कर्मवीरक लक्ष्य केहन होइछ ?

(ii) कर्मवीर केहन होइत छथि ?

(iii) पठित कवितामे नेताक की रूप अछि ?

(iv) 'कर्मवीर' किनकर कविता अछि ?

(v) 'कर्मवीर' सँ अहाँ की बुझैत छी ?

4. दीर्घोत्तरीय प्रश्न-

(i) पठित पाठक भावार्थ लिखू

(ii) पठित पाठक आधार पर कर्मवीरक प्रमुख विशेषता बताउ।

(iii) 'कर्मवीर' क सारांश लिखू।

(iv) पठित पाठमे नेताक लक्षण निरूपित कयल गेल अछि। स्पष्ट करू।

(v) निम्न पाँतीक अर्थ स्पष्ट करू-

घनक चोट सहि लौह धातु सँ होइछ जखन तरूआरि

रहितहु छोट अनेक युद्धमे दैछ शत्रु संहारि

5. निम्न पाँतीक सप्रसंग व्याख्या करू :

(i) कर्मवीरसँ कोटि कोटि संकट भयभीत पड़ाय

रहय दु:ख-पर्वत सभ सम्मुख देखतहिँ शीघ्र नशाय

(ii) कालकूट घट पीबि सुधा-रस जगमे बाँटि सकैछ

मर्त्य -लोकसँ देव-लोक धरि नेता ओ कहबैछ

गतिविधि -

1. 'कर्मवीर' पाठ कंठस्थ कऽ सस्वर पढ़ू।
2. निम्न शब्दक पर्यायवाची लिखू

विश्व , पर्वत, स्वर्ण , गिरि

3 शब्दकोशसँ निम्न शब्दक अर्थ ताकू

धैर्यधनीकेँ, घनक, स्वराष्ट्र, कालकूट।

4. सोना जेना आगिमे तपि कऽ चमकैत अछि तहिना कर्मवीर बाधाक आगिसँ आलोकित होइत छथि - फरिछा कऽ लिखू।

निर्देश -

1. कर्मवीरक विशेषता शिक्षक छात्रकेँ जनतब कराबथि।
2. पठित पाठमे नेताक परिभाषा कोन रूपेँ देल गेल अछि फरिछा कऽ शिक्षक छात्रकेँ बुझाबथि।
3. 'कर्मवीर' मे कविक कहबाक की उद्देश्य छनि - शिक्षक छात्रकेँ विस्तारसँ बुझाबथि।
4. कोनो कर्मवीरक लघु कथा शिक्षक छात्रकेँ सुनाबथि।